ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP.NO.- 219-220

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-II, Issues-20, YEAR- June-2021

वैश्विक आर्थिक संकट : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 राकेश कुमार ओझा E-mail: rakeshojha.eco @gmail.com

Received- 14.06.2021, Revised- 21.06.2021, Accepted - 27.06.2021

सारांश– वैश्विक आर्थिक संकट विश्व अर्थव्यवस्था के उस दौर को दर्शाता है जब उत्पादन, व्यापार, निवेश, रोजगार तथा आय में व्यापक गिरावट आती है और इसका प्रभाव अनेक देशों पर एक साथ पड़ता है। वर्ष 2021 का वैश्विक आर्थिक परिदृश्य कोविड–19 महामारी से उत्पन्न संकट के प्रभावों से गहराई से प्रभावित था। यद्यपि विश्व अर्थव्यवस्था में पुनर्प्राप्ति (Recovery) के संकेत दिखाई देने लगे थे, फिर भी यह पुनर्प्राप्ति असमान, अनिश्चित तथा अनेक चुनौतियों से घिरी हुई थी। महामारी के कारण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएँ बाधित हुईं, बेरोजगारी बढ़ी, सार्वजनिक ऋण में अभूतपूर्व वृद्धि हुई तथा विकासशील देशों में गरीबी और असमानता में वृद्धि हुई। विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के अनुसार 2021 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में वृद्धि के संकेत अवश्य थे, किंतु विभिन्न देशों में टीकाकरण की असमान उपलब्धता, मुद्रास्फीति, आपूर्ति संकट तथा ऋण भार ने आर्थिक पुनरुत्थान को प्रभावित किया।

यह लेख वैश्विक आर्थिक संकट की पृष्ठभूमि, कारणों, प्रभावों, चुनौतियों तथा संभावित समाधानों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

कुंजी भूत शब्दः वैश्विक आर्थिक संकट, विश्व अर्थ व्यवस्था, निवेश, आय।

प्रस्तावना– विश्व अर्थव्यवस्था परस्पर निर्भरता के सिद्धांत पर आधारित है। किसी एक क्षेत्र या देश में उत्पन्न आर्थिक समस्या धीरे–धीरे संपूर्ण विश्व को प्रभावित कर सकती है। 2008 की वैश्विक मंदी के बाद विश्व अर्थव्यवस्था पुनः स्थिरता की ओर बढ़ रही थी, किंतु वर्ष 2020 में कोविड–19 महामारी ने एक अभूतपूर्व वैश्विक संकट उत्पन्न कर दिया।

वर्ष 2021 इस संकट से उबरने का वर्ष माना गया। अनेक देशों ने आर्थिक प्रोत्साहन पैकेज, मौद्रिक नीतियों में ढील तथा व्यापक टीकाकरण कार्यक्रमों के माध्यम से अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। विश्व बैंक के अनुसार 2021 में वैश्विक अर्थव्यवस्था लगभग 5.6 प्रतिशत की दर से बढ़ने की ओर अग्रसर थी, जो पिछले 80 वर्षों में किसी मंदी के बाद सबसे तेज पुनर्प्राप्ति मानी गई। तथापि यह विकास सभी देशों में समान रूप से नहीं हुआ। विकसित देशों ने अपेक्षाकृत तेज़ी से सुधार किया जबकि विकासशील और अल्पविकसित देशों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

अतः 2021 का वैश्विक आर्थिक संकट केवल मंदी का विषय नहीं था, बल्कि यह स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, ऋण प्रबंधन और आर्थिक असमानता से जुड़ा बहुआयामी संकट था।

वैश्विक आर्थिक संकट की अवधारणा– वैश्विक आर्थिक संकट वह स्थिति है जिसमें विश्व स्तर पर आर्थिक गतिविधियों में व्यापक गिरावट आ जाती है। इसके प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं–

- उत्पादन में कमी
- बेरोजगारी में वृद्धि
- निवेश में गिरावट
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार में कमी
- वित्तीय बाजारों में अस्थिरता
- गरीबी और असमानता में वृद्धि

2021 में इन सभी लक्षणों के विभिन्न रूप देखने को मिले। महामारी ने वैश्विक आर्थिक संरचना की कमजोरियों को उजागर कर दिया और यह स्पष्ट किया कि विश्व अर्थव्यवस्था कितनी परस्पर निर्भर हो चुकी है।

वैश्विक आर्थिक संकट के प्रमुख कारण

1. कोविड–19 महामारी– 2021 के आर्थिक संकट का सबसे बड़ा कारण कोविड–19 महामारी थी। महामारी के कारण लगाए गए लॉकडाउन ने उद्योगों, परिवहन, पर्यटन, होटल, विमानन तथा सेवा क्षेत्रों को गंभीर रूप से प्रभावित किया।

विश्व बैंक के अनुसार 2020 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में लगभग 4.3 प्रतिशत की गिरावट आई थी और 2021 में भी उसके प्रभाव बने रहे।

2. वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान– महामारी के कारण चीन, यूरोप और अमेरिका जैसे प्रमुख उत्पादन केंद्रों में उत्पादन प्रभावित हुआ। कंटेनरों की कमी, बंदरगाहों पर भीड़ तथा परिवहन लागत में वृद्धि ने वैश्विक व्यापार को बाधित किया।

इसका प्रभाव विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, औषधि तथा उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन पर पड़ा।

3. बेरोजगारी और आय में गिरावट– लाखों लोगों ने अपनी नौकरियाँ खो दीं। अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत श्रमिक सबसे अधिक प्रभावित हुए। आय में गिरावट के कारण उपभोग कम हुआ, जिससे आर्थिक गतिविधियाँ और धीमी पड़ गईं।

4. सार्वजनिक ऋण में वृद्धि– सरकारों ने आर्थिक गतिविधियों को बनाए रखने के लिए बड़े पैमाने पर राहत पैकेज घोषित किए। परिणामस्वरूप सार्वजनिक ऋण में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

IMF के अनुसार, महामारी के दौरान वैश्विक राजकोषीय सहायता लगभग 14 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँच गई, जिसके कारण कई देशों का ऋण–भार तेजी से बढ़ा।

5. मुद्रास्फीति का दबाव–2021 में मांग बढ़ने और आपूर्ति बाधित होने के कारण मुद्रास्फीति बढ़ने लगी। खाद्य पदार्थों, ऊर्जा तथा कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि ने आर्थिक पुनर्प्राप्ति को जटिल बना दिया।

2021 में वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिति– विश्व बैंक के अनुसार 2021 में वैश्विक आर्थिक वृद्धि दर 5.6 प्रतिशत रहने का अनुमान था। यह वृद्धि मुख्यतः अमेरिका और चीन जैसी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के कारण संभव हुई।

अमेरिका में व्यापक वित्तीय प्रोत्साहन और टीकाकरण अभियान के कारण आर्थिक गतिविधियाँ तेजी से बढ़ीं। चीन ने भी मजबूत औद्योगिक उत्पादन और निर्यात के बल पर आर्थिक वृद्धि बनाए रखी।

इसके विपरीत अनेक विकासशील देशों में टीकों की कमी, कमजोर स्वास्थ्य व्यवस्था और सीमित वित्तीय संसाधनों के कारण पुनर्प्राप्ति की गति धीमी रही। विश्व बैंक ने चेतावनी दी थी कि कई देशों की प्रति व्यक्ति आय महामारी–पूर्व स्तर तक पहुँचने में कई वर्ष लग सकते हैं।

विकासशील देशों पर प्रभाव–

1. गरीबी में वृद्धिः महामारी के कारण करोड़ों लोग पुनः गरीबी रेखा के नीचे चले गए। निम्न आय वाले देशों में यह प्रभाव अधिक गंभीर था।

2. शिक्षा पर प्रभावः स्कूलों के बंद होने से शिक्षा व्यवस्था प्रभावित हुई। डिजिटल संसाधनों की कमी के कारण गरीब देशों में शिक्षा का संकट और गहरा हुआ।

सहा0 आचार्य, अर्थशास्त्र, महाविद्यालय भटवली बाजार(उनवल) गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Corresponding Author

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-II, Issues-20, YEAR- June-2021

3. स्वास्थ्य संकटः कमजोर स्वास्थ्य प्रणालियों वाले देशों में संक्रमण और मृत्यु दर अधिक रही, जिससे आर्थिक उत्पादकता प्रभावित हुई।

4. ऋण संकटः कई विकासशील देशों को स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा पर अधिक खर्च करना पड़ा, जिससे उनके ऋण स्तर में वृद्धि हुई।

विश्व बैंक ने संकेत दिया कि निम्न आय वाले देशों की आर्थिक वृद्धि 2021 में भी पिछले दो दशकों की तुलना में अत्यंत कमजोर रही।

भारत और वैश्विक आर्थिक संकट– भारत भी 2021 में महामारी की दूसरी लहर से गंभीर रूप से प्रभावित हुआ। उत्पादन, रोजगार तथा उपभोग में गिरावट आई। हालांकि डिजिटल अर्थव्यवस्था, सूचना प्रौद्योगिकी, ई–कॉमर्स तथा स्टार्टअप क्षेत्र ने अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन किया।

भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत अभियान, उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजना तथा डिजिटल इंडिया जैसी पहलों के माध्यम से आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने का प्रयास किया।

भारत की अर्थव्यवस्था ने 2021 के उत्तरार्ध में पुनर्प्राप्ति के संकेत दिए और दीर्घकालिक विकास की संभावनाएँ बनी रहीं।

वैश्विक आर्थिक संकट और अंतरराष्ट्रीय व्यापार

अंतरराष्ट्रीय व्यापार विश्व अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। महामारी के कारण व्यापारिक गतिविधियाँ बाधित हुईं। कई देशों ने निर्यात प्रतिबंध लगाए तथा सीमा नियंत्रण कड़े किए।

विश्व बैंक ने सुझाव दिया कि व्यापार लागत को कम करने, लॉजिस्टिक्स सुधारने और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को अधिक लचीला बनाने की आवश्यकता है।

वैश्विक संकट ने यह भी स्पष्ट किया कि किसी एक देश या क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भरता भविष्य में जोखिम उत्पन्न कर सकती है।

आर्थिक संकट से उबरने के उपाय–

1. वैश्विक सहयोगः महामारी जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है। टीकों, स्वास्थ्य संसाधनों और तकनीक का समान वितरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

2. स्वास्थ्य अवसंरचना का सुदृढ़ीकरणः स्वास्थ्य क्षेत्र में निवेश बढ़ाकर भविष्य की महामारियों के लिए तैयारी करनी होगी।

3. हरित एवं समावेशी विकासः आर्थिक पुनर्प्राप्ति को पर्यावरणीय स्थिरता के साथ जोड़ना आवश्यक है।

4. डिजिटल परिवर्तनः डिजिटल तकनीकों का उपयोग उत्पादन, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा वित्तीय सेवाओं में दक्षता बढ़ा सकता है।

5. ऋण प्रबंधनः विकासशील देशों के लिए ऋण पुनर्गठन और वित्तीय सहायता की व्यवस्था आवश्यक है।

6. रोजगार सृजनः श्रम–प्रधान उद्योगों को प्रोत्साहन देकर रोजगार के अवसर बढ़ाए जाने चाहिए।

भविष्य की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ– 2021 के बाद विश्व अर्थव्यवस्था के सामने अनेक चुनौतियाँ बनी रहीं–

•बढ़ती मुद्रास्फीति
•सार्वजनिक ऋण का बढ़ता बोझ
•भू–राजनीतिक तनाव
•जलवायु परिवर्तन
•ऊर्जा सुरक्षा
•तकनीकी असमानता

साथ ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल अर्थव्यवस्था, हरित ऊर्जा तथा नवाचार आधारित उद्योग भविष्य के विकास के नए अवसर भी प्रदान करते हैं।

यदि राष्ट्र समावेशी और सतत विकास की नीतियाँ अपनाएँ, तो वैश्विक अर्थव्यवस्था दीर्घकाल में अधिक मजबूत और लचीली बन सकती है।

निष्कर्ष– वर्ष 2021 का वैश्विक आर्थिक संकट आधुनिक इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक घटनाओं में से एक था। कोविड–19 महामारी ने न केवल स्वास्थ्य संकट उत्पन्न किया, बल्कि विश्व अर्थव्यवस्था की संरचनात्मक कमजोरियों को भी उजागर किया। यद्यपि 2021 में आर्थिक पुनर्प्राप्ति के संकेत दिखाई दिए, फिर भी यह पुनर्प्राप्ति असमान, अनिश्चित और अनेक जोखिमों से घिरी हुई थी। विकसित देशों ने अपेक्षाकृत तेज़ी से सुधार किया, जबकि विकासशील देशों को गरीबी, ऋण, बेरोजगारी और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इस संकट ने यह स्पष्ट कर दिया कि वैश्विक समस्याओं का समाधान केवल राष्ट्रीय स्तर पर नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय सहयोग और समन्वय के माध्यम से ही संभव है।

अतः 2021 का वैश्विक आर्थिक संकट मानवता के लिए एक महत्वपूर्ण सीख है कि आर्थिक विकास को स्वास्थ्य सुरक्षा, सामाजिक न्याय, तकनीकी नवाचार और सतत विकास के साथ संतुलित करना आवश्यक है। तभी विश्व भविष्य के संकटों का प्रभावी ढंग से सामना कर सकेगा।

REFERENCES

1. International Monetary Fund (IMF), World Economic Outlook: Recovery During a Pandemic, October 2021.
2. IMF
3. World Bank, Global Economic Prospects, January 2021.
4. World Bank, Global Economic Prospects, June 2021.
5. IMF Fiscal Monitor Update, 2021. Reddit.
6. OECD Economic Outlook, Interim Report, September 2021.
7. Reddit.
8. Mishkin, Frederic S. The Economics of Money, Banking and Financial Markets.
9. Krugman, Paul & Obstfeld, Maurice. International Economics.
10. Reserve Bank of India, Annual Report 2021.
11 United Nations Development Programme (UNDP), Human Development Report 2021.
12. World Trade Organization (WTO), World Trade Report 2021.